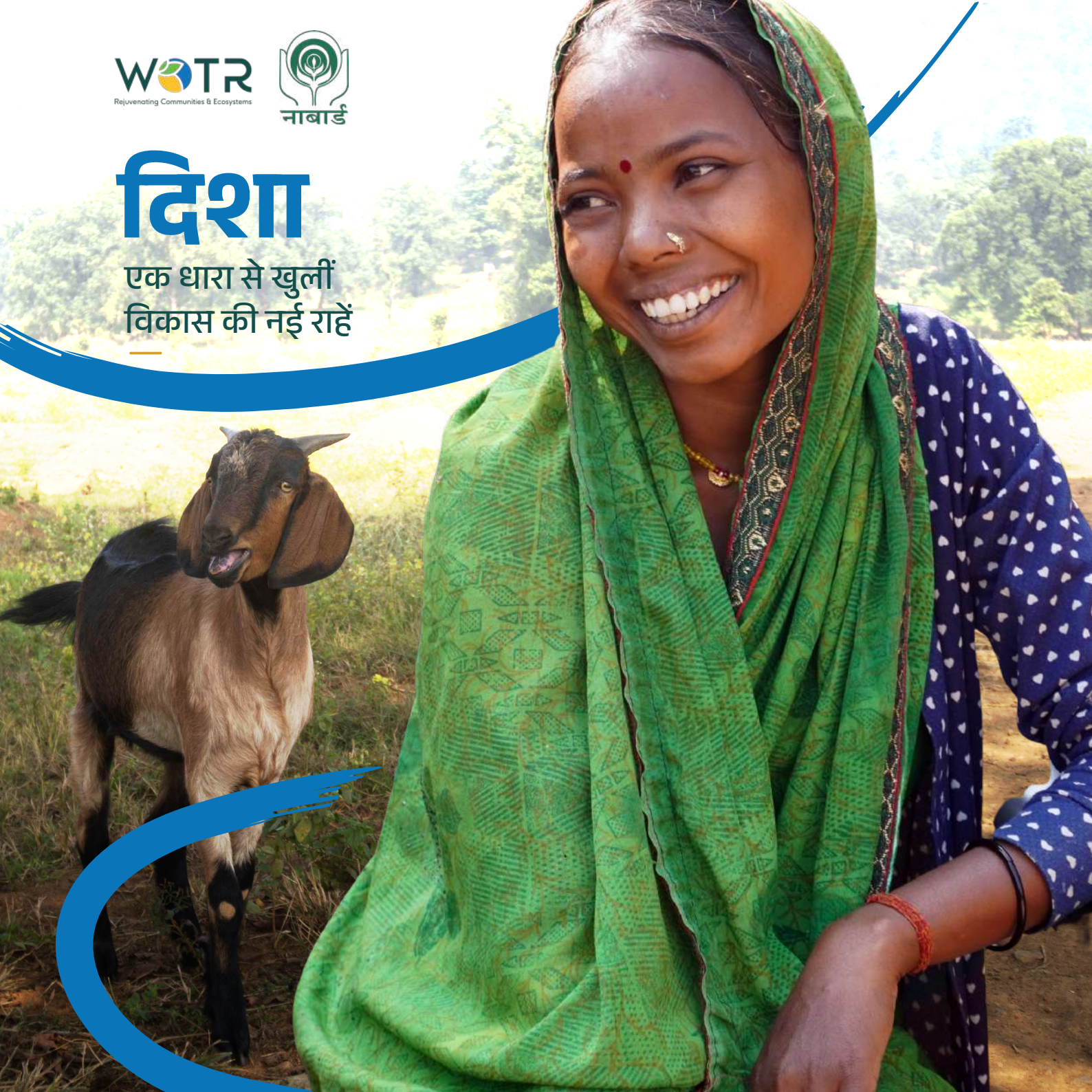


WOTR
Rejuvenating Communities & Ecosystems



दिशा

एक धारा से खुलीं
विकास की नई राहें





श्रेय

मुख्य लेखक: शाल्मली भागवत, WOTR कम्युनिकेशंस

हिंदी अनुवादक : वर्षा सिंह

संपादन: WOTR कम्युनिकेशंस

फोटोग्राफ: नीरज कुमार, WOTR

डिज़ाइन: अद्वैत मोरे, सरबत डिज़ाइन

अस्वीकरण: यहाँ व्यक्त विचार लेखक के हैं और आवश्यक नहीं कि वे दाता संस्था तथा WOTR (वॉटरशेड ऑर्गनाइज़ेशन ट्रस्ट) के विचारों को दर्शाते हों या उनसे संबद्ध हों।

अधिक जानकारी के लिए:

वॉटरशेड ऑर्गनाइज़ेशन ट्रस्ट (WOTR मुख्य कार्यालय)

द फ़ोरम, द्वितीय तल, पद्मावती कॉर्नर, पुणे-सतारा रोड, पुणे - 411009

फ़ोन: +91 20 24226211 | फ़ैक्स: +91 20 2413530

इस पुस्तिका के उपयोग पर अपने बहुमूल्य सुझाव और टिप्पणियाँ भेजें:

communications@wotr.org

आमुख


कैसा होता होगा हर साल पहाड़ियों से उतरती जलधारा को यूँ ही देखते रहना, और फिर भी उसे सहेजने का कोई इंतज़ाम न होना?

ऊँचे, हरे-भरे साल के वृक्षों से घिरे जंगलों के बीच बारहों महीने रहना, लेकिन मानसून के विदा होते ही खेतों का सूना पड़ जाना?

छत्तीसगढ़ में सूरजपुर ज़िले के रामगढ़ गांव के 121 परिवारों ने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा इसी वास्तविकता के साथ बिताया है।

गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान के पास पहाड़ियों के बीच बसे रामगढ़ गांव में बैगा और गोंड समुदाय के लोग रहते हैं, जो ऐतिहासिक रूप से विकास की मुख्यधारा से दूर रहे हैं। प्रकृति की उदारता - हरे-भरे जंगल, पोषक मिट्टी और साल भर बहती जलधाराएँ - से समृद्ध होने के बावजूद, आर्थिक संसाधनों की कमी ने छत्तीसगढ़ के इन आदिवासी समुदायों को उनका प्रभावी उपयोग करने से वंचित रखा। बारिश पर निर्भर खेती से होने वाली आमदनी घर चलाने के लिए नाकाफी थी, जिसके चलते हर परिवार का कम से कम एक सदस्य पास की कोयला खदानों में काम करने को मजबूर था। बकरी, गाय जैसे पशुधन और वनोपज से कुछ अतिरिक्त आमदनी होती थी, लेकिन वह भी सीमित ही रहती थी।

रामगढ़ में बसे अधिकांश परिवार दरअसल विस्थापन की कहानी अपने साथ लेकर आए हैं। उनका मूल गाँव छत्तीसगढ़ में रिहंद बांध के जलाशय में समा गया। यह बांध भारत की पहली पंचवर्षीय योजना के दौरान बना था, जब पंचवर्षीय योजनाएं देश के केंद्रीकृत और एकीकृत राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रमों का आधार थीं। बांध बनने के बाद इन



परिवारों को रामगढ़ में आकर बसना पड़ा। आज रिहंद बांध का जलाशय देश के सबसे बड़े जलाशयों में शामिल है। रिहंद नदी के किनारे पीढ़ियों से रह रहे इन लोगों के लिए पहाड़ी इलाके में बसना आसान नहीं था। यह इलाका उनके लिए पहले मुख्य रूप से शिकार और पशु चराने तक सीमित था। गरीबी और इलाके की सीमित जानकारी ने इन चुनौतियों को और बढ़ा दिया, जिनका असर आज भी इन समुदायों के जीवन में साफ़ दिखाई देता है।

वॉटरशेड ऑर्गनाइज़ेशन ट्रस्ट (WOTR) ने 2024 में छत्तीसगढ़ के सूरजपुर ज़िले में ‘Ensuring Farm Livelihood through Assured Irrigation of Tribal Communities in Surajpur district, Chhattisgarh’ (आदिवासी समुदायों के लिए सुनिश्चित सिंचाई के माध्यम से कृषि आजीविका सुनिश्चित करना परियोजना) के तहत NABARD के सहयोग से रामगढ़ में काम शुरू किया। सूरजपुर के लगभग 58% क्षेत्र वन क्षेत्र के अंतर्गत है, लेकिन रेत और पत्थर के व्यापक खनन — जिसमें अवैध खनन भी शामिल है — ने जल चक्र को बाधित किया है और मानव-पशु संघर्ष को बढ़ाया है। रामगढ़ के लगभग 80% परिवार सालाना 40,000-50,000 रुपये कमाते हैं, जिनकी छोटी और खंडित भूमि तक सिंचाई की सुविधा नहीं पहुंचती थी। ऊबड़-खाबड़ भूप्रदेश, खराब वर्षा जल और वन क्षरण ने किसानों को एक ही खरीफ फसल तक सीमित कर दिया और उत्पादकता में गिरावट आ गई। यह परियोजना सुनिश्चित सिंचाई, संसाधन प्रबंधन और जनजातीय समुदायों के लिए आजीविका को मजबूत बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई थी।

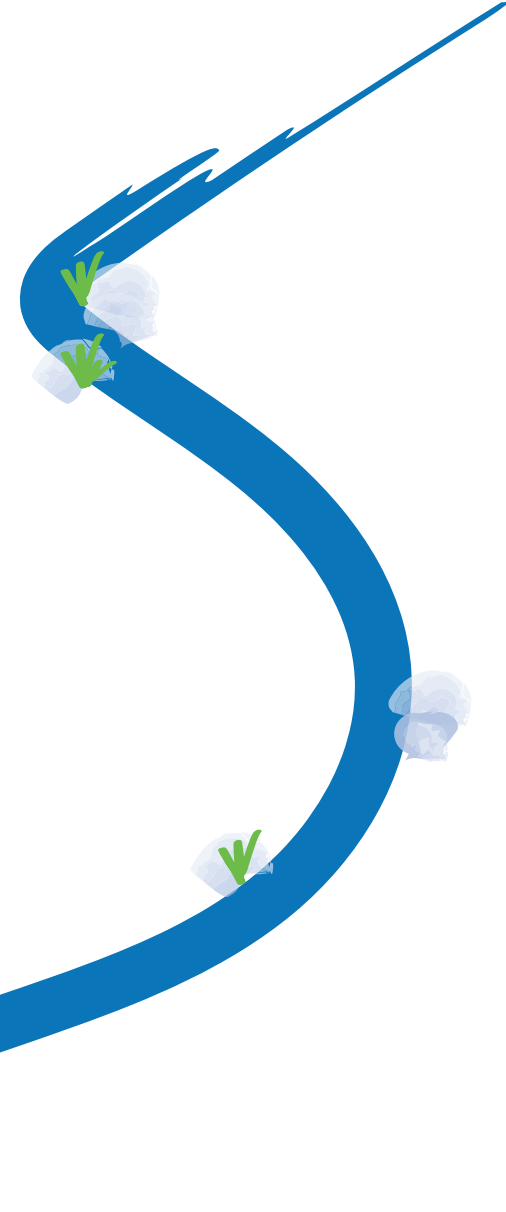
इलाके के परिदृश्य, भूविज्ञान और जल विज्ञान का गहन अध्ययन करने के बाद एक ऐसे समाधान पर काम किया गया, जिसमें कम लागत हो, पर्यावरण को न्यूनतम नुकसान पहुंचे और खेती को अधिकतम लाभ मिल सके। इसी सोच के तहत डायवर्जन आधारित सिंचाई प्रणाली (डायवर्जन बेस्ड इरिगेशन—DBI) को चुना गया।

डीबीआई एक सरल और किफायती तरीका है, जिसमें ढलान और गुरुत्वाकर्षण की मदद से नदियों और जलधाराओं से पानी को नज़दीकी खेती वाले क्षेत्रों तक पहुँचाया जाता है। यह प्रणाली खास तौर पर पहाड़ी और पर्वतीय इलाकों के लिए उपयुक्त है। इसके ज़रिये सिंचाई के लिए आवश्यक मात्रा में पानी सुनिश्चित किया जाता है, जबकि शेष पानी जमीन में रिसकर भूजल के रूप में समा जाता है। यह तकनीक न केवल सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराती है, बल्कि उस पानी का संरक्षण भी करती है, जो पहले बहकर व्यर्थ चला जाता था।

रामगढ़ में एक बारहमासी जलधारा का पानी पीवीसी पाइप के ज़रिये 1.2 लाख लीटर क्षमता वाले बड़े टैंक में पहुँचाया गया। इस टैंक से पांच आउटलेट के ज़रिये पानी पांच खेतों तक गया, जिससे 81 एकड़ से अधिक भूमि को लाभ मिला। इस जमीन के मालिक लगभग 83 छोटे किसान हैं। ऐसा गांव जो पहले मानसून के बाद बंजर दिखता था, अब चारों तरफ हरियाली से भर गया है। रबी के मौसम में दूसरी फसल उगाना, जो पहले असंभव लगता था, अब लोगों के लिए हकीकत बन गया है।

लेकिन डीबीआई केवल शुरुआत थी। सामूहिक जिम्मेदारी, नियमित देखरेख और जानकारी-आधारित फैसलों के अभाव में यह ढांचा लंबे समय तक टिक पाना संभव नहीं था। जैसे ही समुदाय ने पानी के प्रबंधन के लिए खुद को संगठित किया, अन्य हस्तक्षेप भी शुरू हुए, जिससे आजीविका मजबूत हुई, कृषि के तरीकों में सुधार हुआ, और ऐसी व्यवस्था बनी, जो लंबे समय तक टिक सके।

यह बुकलेट रामगढ़ की इस यात्रा का दस्तावेज़ है—एक ऐसी यात्रा, जिसमें समुदाय की सक्रिय भागीदारी से शुरू हुआ एक हस्तक्षेप ने धीरे-धीरे गांवों में व्यापक विकास के रास्ते खोलता चला गया।





अनुक्रम



03 धारा की राह से बदलते गांव की कहानी

रामगढ़ में पहली बार गेहूं और मक्के की खेती

11

16

एक ऊँचे बकरीशेड से शुरू हुई
सुमन की आत्मनिर्भर यात्रा

सशक्त नेतृत्व: रामगढ़ में वीडिीसी अध्यक्ष
मनबसिया सिंह की प्रेरक यात्रा

22

28

सोलर फेंसिंग के साथ फिर से बोई गई उम्मीद

धारा की राह से बदलते गांव की कहानी





हम हर दिन, हर साल, खेतों के पास बहती जलधारा को देखते रहे। हमारे पास हमेशा पानी था, लेकिन कुएँ खोदने या पंप लाने के लिए पैसे नहीं थे, जिससे हम इसका इस्तेमाल कर सकें।”

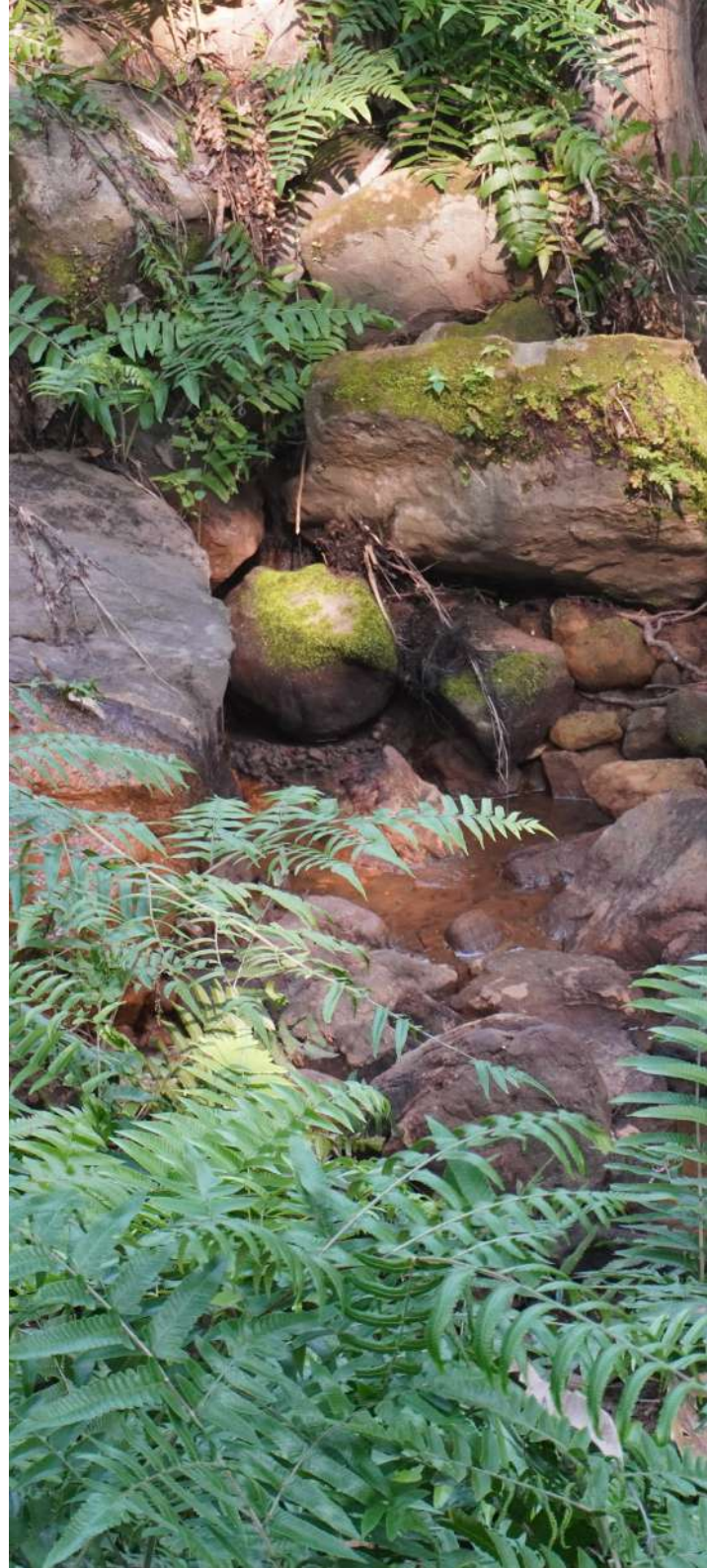
राणा प्रताप सिंह रामगढ़ के ऊपर की पहाड़ी से उस संकरी जलधारा की ओर इशारा करते हैं। वह चट्टानों के बीच से बहती है और जगह न पता हो तो आसानी से दिखती भी नहीं।

“ये पानी साल भर ऐसे ही रहता है और अब डायवर्जन पर आधारित सिंचाई के ज़रिये पूरे गांव को पानी देता है”, वह कहते हैं।

थोड़ी दूरी पर नीचे की ओर, पानी एक छोटे गड्ढे में जमा होता है, जिसके किनारे सीमेंट से बनाए गए हैं और यह पानी को संग्रहित करता है। गड्ढे में मिट्टी रोकने और पानी को बहने देने के लिए सावधानी से पत्थरों की संरचना बनाई गई है। यहां से पानी पाइपलाइन के जरिए पहाड़ी ढलान के नीचे एक बड़े सीमेंट टैंक तक जाता है। इस टैंक से अब पांच आउटलेट सीधे किसानों के खेतों तक पानी पहुंचाते हैं।

यहां का परिदृश्य हरियाली और विविधता को समेटे है। जलीय जावा फर्न जमीन पर चादर की तरह बिछी हुई हैं, और दशकों से पानी के बहने का प्राकृतिक रास्ता दिखा रही हैं। यह नमी, जिसका लंबे समय तक कोई उपयोग नहीं हुआ, अब स्पष्ट दिखती है।

40 वर्षीय राणा प्रताप सिंह लगभग 18 साल की उम्र से खेती कर रहे हैं। वर्षों तक उनके घर की आमदनी पूरी तरह से मानसून पर निर्भर रहती थी। लगभग दो एकड़ जमीन पर वह साल में केवल एक बार, खरीफ के मौसम में धान की फसल उगाते थे।



आमदनी कमी भी पर्याप्त नहीं थी। बारिश पर निर्भर खेती के कारण अनिश्चितता हमेशा बनी रहती थी। गांववालों ने पानी की कमी का मुद्दा कई बार स्थानीय नेताओं, ग्राम पंचायत और सरकारी अधिकारियों के सामने उठाया। फिर भी कोई टिकाऊ समाधान नहीं मिल पाया।



इधर भी जंगल, उधर भी जंगल। जंगल की वजह से हमें पानी नहीं मिल पाता था।” राणा प्रताप बताते हैं।

वन विभाग के अधीन क्षेत्र में बसे होने के कारण समुदाय पास की ढलानों पर कोई जल संचयन संरचना नहीं बना सकता था।

हालांकि कुछ सक्षम किसानों ने मनरेगा (MGNREGA) की मदद से अपने-अपने कुएँ बनवा लिए थे, लेकिन राणा प्रताप जैसे अधिकांश छोटे किसानों का संघर्ष बना रहा। खासकर मानसून के बाद पानी की उपलब्धता हर साल एक बड़ी चुनौती बन जाती थी।

मुश्किल सालों में, अपने पाँच सदस्यीय परिवार का खर्च चलाने के लिए उन्हें स्थानीय साहूकारों से कर्ज लेना पड़ा, सिर्फ बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए वे धीरे-धीरे कर्ज के जाल में फँसते गए।

पानी की कमी समस्या का सिर्फ एक हिस्सा थी। खरीफ (मानसून) की फसल के बाद, गांववालों के पशु रबी (सर्दियों) के मौसम में चरने के लिए खुले छोड़ दिए जाते थे। छोटे किसानों के लिए यह दूसरी फसल लगभग असंभव बना देता था, क्योंकि

जो थोड़ी-बहुत हरियाली बचती थी, पशु उसे भी नष्ट कर देते थे। राणा प्रताप के पास कोई पशु नहीं था, इसलिए जब फसल न उगी, तो उनके पास दूसरा वैकल्पिक सहारा नहीं था। उनका अनुमान है कि रामगढ़ के आधे से भी कम परिवारों के पास पशु थे।

डीबीआई से शुरू हुई सामूहिक पहल और सिंचाई की नई राह

वर्ष 2024 में, जब WOTR ने रामगढ़ में काम करना शुरू किया, 'Ensuring Farm Livelihood through Assured Irrigation of Tribal Communities in Surajpur district, Chhattisgarh' (आदिवासी समुदायों के लिए सुनिश्चित सिंचाई के माध्यम से कृषि आजीविका सुनिश्चित करना परियोजना) के तहत हालात बदलने लगे। ओडिशा में डीबीआई (Diversion-Based Irrigation) प्रणाली बनाने के अपने पहले के अनुभव के आधार पर WOTR ने गांव के नौ प्रतिनिधियों के लिए एक एक्सपोजर विज़िट आयोजित किया।

ओडिशा में उन्होंने ऐसे गांव देखे, जहाँ रामगढ़ से भी छोटी जलधाराओं का सालभर खेती के लिए सावधानी से प्रबंधन किया जाता था। सरल लेकिन प्रभावी जल-प्रवाह नियंत्रण प्रणालियों की मदद से खेत मानसून के बाद भी अच्छी तरह उत्पादक बने रहते थे। रामगढ़ के प्रतिनिधियों के लिए यह समझने का अवसर था कि अगर इतनी छोटी धाराओं का वहाँ इतना सही इस्तेमाल हो सकता है, तो ऐसा तरीका अपने गांव में क्यों नहीं काम कर सकता।



यात्रा के बाद, WOTR ने रामगढ़ के स्थानीय भूगोल का अध्ययन करने के लिए एक इंजीनियर को काम पर लगाया। ढलान और जल प्रवाह के अनुसार एक उपयुक्त डीबीआई संरचना का प्रस्ताव तैयार किया गया। वन विभाग से अनुमति लेना अब भी सबसे बड़ी बाधा थी, क्योंकि प्रस्तावित टैंक का स्थान वन क्षेत्र में आता था। अपनी परिस्थितियों को बदलने के दृढ़ निश्चय के साथ, गांव के चार प्रतिनिधि WOTR के कर्मचारी के साथ महुली गए और गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान के वन परिक्षेत्र अधिकारी से मुलाकात की।

प्रस्तावित संरचना के सामूहिक लाभ समझाने के बाद अनुमति मिल गई।

जंगल से लगे ढलान के तल में स्थित खेत वाले 25-26 किसान उत्साह के साथ एकजुट हुए। एक्सपोज़र विज़िट से मिली सीख नौ प्रतिनिधियों ने मासिक बैठकों में साझा की, जिससे समुदाय में विश्वास और सहमति बनी। समुदाय ने टैंक, पाइपलाइन और LBS (Loose Boulder Structure) बनाने में स्वेच्छा से श्रमदान दिया। तीन महीनों में डीबीआई प्रणाली तैयार हो गई।

सभी लाभार्थी किसानों को शामिल करते हुए एक जल उपयोगकर्ता समूह (Water User Group) का गठन किया गया। समूह ने एक संयुक्त बैंक खाता खोला, जिसमें प्रत्येक सदस्य ने प्रारंभ में 1,000 रुपये का योगदान दिया। डीबीआई से लाभान्वित हर किसान हर फसल के बाद पहिले 100, फिर 200 रुपये, और अब 500 रुपये का योगदान देता है।

इस फंड का उपयोग केवल संचालन और रखरखाव के लिए किया जाता है, जिससे यह प्रणाली आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी रहती है। जल उपयोगकर्ता संघ हर महीने बैठक करता है, जिसमें रखरखाव की जरूरतों की समीक्षा और पानी के वितरण का प्रबंधन किया जाता है। पानी के उपयोग के लिए सप्ताह के अलग-अलग दिन तय किए गए हैं, ताकि सभी को समान और प्रभावी रूप से पानी मिल सके।

इसका असर पहले ही मानसून से दिखाई देने लगा। निर्माण पूरा होते ही टैंक में पानी इकट्ठा होने लगा और मानसून की बारिश ने

जल प्रवाह को और बढ़ा दिया। पहली बार पानी बिना किसी रुकावट के पहाड़ियों से टैंक तक, फिर पाइपलाइन के ज़रिये सीधे खेतों तक पहुंचा।

अब यही पानी खेतों और उम्मीदों दोनों को सींचता है

“जिस गांव में कभी रबी की खेती की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, वहां अब साल में दो बार खेती हो रही है,” राणा प्रताप गर्व से कहते हैं।

धान उनकी मुख्य फसल बनी हुई है, लेकिन अब उन्होंने तिल और सरसों जैसी फसलों की भी खेती शुरू कर दी है। मिंडी, टमाटर और बैंगन जैसी सब्जियां अब घर की पोषण ज़रूरतों के साथ-साथ आमदनी में योगदान दे रही हैं। रबी के मौसम में गेहूं की खेती भी की जा रही है।

पहले, खाने का इंतज़ाम करने के लिए भी कर्ज़ लेना पड़ता था। आज उनकी उपज स्थानीय व्यापारियों और आसपास के बाज़ारों में बिक रही है, जिससे घर की आर्थिक स्थिति मज़बूत हुई है।

बेहतर जल-सुरक्षा मिलने के बाद राणा प्रताप ने WOTR द्वारा प्रोत्साहित जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियाँ अपनानी शुरू कीं। अब वे धान की खेती में एसआरआई (System of Rice Intensification) पद्धति का उपयोग करते हैं, वर्मी-कम्पोस्ट तैयार करते हैं और नीमास्त्र व दशपर्णी अर्क जैसे जैविक पदार्थों का इस्तेमाल करते हैं।

पहले कीट नियंत्रण के लिए वे जंगलों से भराही पौधा लाते थे, जो पूरी तरह उसकी उपलब्धता पर निर्भर और काफी अनिश्चित तरीका था। इसके मुकाबले नीमास्त्र अधिक सुरक्षित, प्रभावी और समय बचाने वाला साबित हुआ है। अब उन्होंने हाइब्रिड फसल किस्मों को भी अपनाया है। जहाँ पहले एक ही क्षेत्र के लिए 20 किलो बीज लगते थे, वहीं अब सिर्फ 6 किलो बीज से काम हो जाता है। इससे लागत कम हुई और उत्पादन में भी बढ़ोतरी हुई।





ये एफ1 हाइब्रिड बीज हैं। दो अलग-अलग, शुद्ध मूल किस्मों को मिलाकर तैयार की गई पहली पीढ़ी की फसल। ये बीज एकरूपता, बेहतर उत्पादन क्षमता और रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोध के लिए जाने जाते हैं। हालाँकि, इन बीजों से अच्छे नतीजे तभी मिलते हैं जब बुवाई सही तरीके से की जाए, मिट्टी की सेहत बनाए रखने के लिए नियमित रूप से खाद डाली जाए, और खेती से जुड़ी अन्य तकनीकी प्रक्रियाओं का पालन किया जाए। WOTR रामगढ़ के किसानों को नियमित प्रशिक्षण देता है, ताकि ये बेहतर खेती पद्धतियाँ ज़मीन पर सही ढंग से लागू हो सकें।

डीबीआई की सफलता ने गांव से बाहर भी ध्यान खींचा है। इस संरचना को देखने के लिए कोरिया ज़िले से लोग रामगढ़ आए। भविष्य की योजनाओं के बारे में पूछे जाने पर वे कहते हैं, “पानी को पूरी तरह रोकना हमारा उद्देश्य नहीं है। जितनी ज़रूरत है, उतना ही इस्तेमाल करेंगे।”

उनका मानना है कि रामगढ़ में एक और डीबीआई प्रणाली बनाई जाए, तो इससे और भी ज़्यादा परिवारों को लाभ मिल सकता है।

राणा प्रताप के लिए सबसे अहम है कि जो हासिल हुआ है, उसे कायम रखा जाए। वे कहते हैं,

“हमें रास्ता दिखाया गया है। इसी रास्ते से चलते रहेंगे।

77



रामगढ़ में पहली बार गेहूं और मक्के की खेती





डीबीआई(DBI) ने रामगढ़ में वह कर दिखाया, जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। इसकी वजह से हम रबी की फसल लगा पाएँ हैं।”

फूलसाय पंडो कहते हैं। वह रामगढ़ गांव के किसान हैं। अपनी 2 एकड़ ज़मीन पर उन्होंने हाल ही में लगभग 275 किलो गेहूँ और 75 किलो मीठे मक्के की कटाई पूरी की है। कुछ साल पहले तक यहां ऐसे दृश्य के बारे में सोचना भी मुश्किल था।

उनके खेत की फ़सल काटी जा चुकी है। यहीं एक पेड़ के नीचे बैठकर फूल साय पंडो हमें यहां तक पहुंचने की कहानी सुनाते हैं। वह अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ रहते हैं। सबसे बड़ा 19 साल का बेटा खेती के काम में उनकी मदद करता है। दूसरा 17 साल का बेटा बिहारपुर में कक्षा ग्यारहवीं में पढ़ रहा है। सबसे छोटा बच्चा सात साल का है और रामगढ़ के स्थानीय स्कूल में पढ़ता है।

“हम दूसरों की ज़मीन पर काम किया करते थे”, वह याद करते हैं, “आधी पैदावार ज़मीन के मालिक को चली जाती थी। जो बचा-कुचा हमें मिलता था उससे किसी तरह घर चल पाता था।” एक वयस्क व्यक्ति के तौर पर फूलसाय भी इसी रास्ते पर आगे बढ़ते रहे। सिंचाई की टिकाऊ व्यवस्था न होने के कारण वर्ष 2023 तक उनकी ज़मीन ज़्यादातर बेकार पड़ी रही। वर्ष 2023 में मनरेगा (MGNREGA) के तहत पहली बार उनकी ज़मीन को समतल किया गया। इससे पहले ऊबड़-खाबड़ भू-आकृति के

कारण पानी और पोषक तत्व खेत में समान रूप से नहीं पहुंच पाते थे, ज़मीन के समतल होने से पूरे खेत में काम करने की संभावना बनी।

इसके बावजूद सिंचाई के अभाव में खेती पूरी तरह बारिश पर निर्भर रही। साल में केवल एक बार वर्षा पर निर्भर धान की फसल ही की जा पाती थी, जिससे उन्हें सालाना लगभग 30,000 रुपये की आमदनी होती थी।

जब खेत में फसल नहीं होती थी तो हालात बेहद कठिन हो जाते थे। कभी-कभार मनरेगा का काम मिल जाता था, लेकिन लंबे समय तक काम न मिलने से परिवार की आर्थिक हालत डगमगाने लगती थी।

“कभी बारिश अच्छी होती थी तो थोड़ी फ़सल हो जाती थी”, वह बताते हैं। “लेकिन अगर बरसात ठीक न हो तो सब बिगड़ जाता था।”

डीबीआई: रामगढ़ में खुशहाली की नई लहर

‘Ensuring Farm Livelihood through Assured Irrigation of Tribal Communities in Surajpur district, Chhattisgarh’ (आदिवासी समुदायों के लिए सुनिश्चित सिंचाई के माध्यम से कृषि आजीविका सुनिश्चित करना) परियोजना के तहत बनवाए गए डायवर्ज़न आधारित सिंचाई (डीबीआई) सिस्टम के निर्माण के साथ हालात में निर्णायक बदलाव आया। फूलसाय इसके निर्माण में सक्रिय

रूप से शामिल रहे। आज वह इस प्रणाली से लाभान्वित होने वाले 83 किसानों में शामिल हैं, जो अपनी लगभग 81.2 एकड़ भूमि पर खेती कर रहे हैं। साल भर पानी की उपलब्धता से, पहले ही वर्ष में उन्होंने रबी (फ़रवरी) के मौसम में गेहूँ की खेती की। ये कुछ ऐसा था जो रामगढ़ ने पहले कभी नहीं देखा था। इसके साथ ही उनकी खेती का चक्र स्थिर हो गया: खरीफ में धान और रबी में गेहूँ।





30,000 से 51,250 तक का सफ़र और नया आत्मविश्वास

एक और फैसले ने फूलसाय की किस्मत पूरी तरह बदल दी। नाबार्ड के सहयोग से WOTR द्वारा आयोजित फ़ार्मर फ़्रील्ड स्कूल (FFS) के माध्यम से फूलसाय और 25 अन्य किसानों को स्वीट कॉर्न यानी मीठे मक्के की खेती से परिचित कराया गया। रामगढ़ की मिट्टी और जलवायु इस फसल के लिए उचित थी। लेकिन जानकारी की कमी के कारण किसानों के मन में इसकी सफलता को लेकर कई प्रश्न थे।



मीठा मक्का, एक उच्च-मूल्य और कम समय में उगने वाली फ़सल है। ये रबी के मौसम में गेहूँ के साथ उगाई जा सकती थी।



इसको उगाने में कोई दिक्कत नहीं हुई”, फूलसाय ने आत्मविश्वास से कहा, “उल्टा सिर्फ़ फ़ायदा हुआ।”

केवल बारिश में धान की खेती करने से दूसरे मौसमों में खेती कर पाना एवं विभिन्न प्रकार की फ़सलें उगा पाना, उत्पादन और आय में बड़ी सफलता लेकर आया। फ़सल में विविधता के साथ ही फूलसाय ने WOTR द्वारा प्रचारित जलवायु -प्रतिरोधी कृषि पद्धतियों, यानि वे उपाय हैं जो बदलती जलवायु के प्रभाव को कम करके आजीविका और संसाधनों की सुरक्षा करते हैं, ऐसी पद्धतियों को अपनाया। उनके खेत में एक वर्मिबेड भी लगाया गया। उन्हें जीवामृत, दशपर्णी अर्क और अन्य जैविक सामाग्री तैयार करने व उपयोग करने का प्रशिक्षण भी मिला।

आज वह पूरी तरह इन पद्धतियों पर निर्भर हैं। मिट्टी की उर्वरता में सुधार हुआ है, नमी बनाए रखने की क्षमता बढ़ी है, और फसल की सेहत भी साफ़तौर पर बेहतर हुई है। उपज स्थानीय व्यापारियों को बेची जाती है। जिससे बाहरी सामाग्री और बाज़ार पर निर्भरता कम हुई है।

उनकी वार्षिक आय लगभग 30,000 रुपये से बढ़कर 51,250 रुपये हो गई है। साथ ही पहले की तुलना में कहीं बेहतर आर्थिक स्थिरता आई है।



एक ऊँचे बकरीशेड से शुरू हुई सुमन की आत्मनिर्भर यात्रा



रामगढ़ गांव में सुमन सिंह के घर तक पहुंचते-पहुंचते कच्चे रास्ते धीरे-धीरे एक सधे हुए आंगन में बदल जाते हैं। देहरी पर कदम रखते ही नजर सबसे पहले लकड़ी के खंभों पर टिके बकरियों के शेड पर ठहर जाती है—ऊंचा, व्यवस्थित और असामान्य रूप से साफ़। न कहीं गंदगी, न बदबू; बस हल्की सी पशुओं की आहट, जो उनकी अच्छी देखभाल की गवाही देती है। शेड के पीछे खुला आंगन फैला है, जहां फूलों के पौधे सलीके से लगे हैं और कुछ मुर्गियां इधर-उधर दाना चुगते हुए चहलकदमी कर रही हैं। इस पूरे दृश्य के बीचों-बीच मिट्टी से बना पक्का घर मजबूती से खड़ा है—जैसे रोजमर्रा की मेहनत और सादगी से गढ़ी हुई एक शांत, आत्मनिर्भर दुनिया।

हमारे पहुंचने पर 25 वर्षीय सुमन बकरी शेड की सफ़ाई में जुटी हुई थीं। उनकी बकरियां चरने गई थीं। वे झाड़ू एक तरफ रखकर मुस्कराते हुए हमें आंगन में बैठने के लिए कहती हैं।

छत्तीसगढ़ के सरगुजा ज़िले के बर्तीकला गांव की रहने वाली सुमन की शादी 18 साल की उम्र में हो गई थी। वर्ष 2020 में वे अपने पति धर्म सिंह और उनके बड़े से परिवार के साथ रहने रामगढ़ आ गईं। शादी से पहले उन्होंने मैट्रिक तक पढ़ाई पूरी कर ली थी और पति के सहयोग से आगे की पढ़ाई जारी रखी। फिलहाल सुमन बिहारपुर से स्नातक की पढ़ाई कर रही हैं।

पशुपालन हमेशा से सुमन के जीवन का अहम हिस्सा रहा है। बचपन से ही उनके घर में मुर्गियां, बकरियां, गाय और बैल पाले जाते थे। जानवरों की देखभाल में वे नियमित रूप से हाथ बंटती थीं। उन्हें चराने ले जाना, आसपास साफ़-सफ़ाई रखना और

समय पर टीकाकरण का ध्यान रखना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। “जब भी समय मिलता मुझे जानवरों के साथ रहना अच्छा लगता था,” सुमन कहती हैं। “उनकी देखभाल करना मुझे पसंद है।”

चार बकरियों से शुरू हुई संघर्ष भरी जिम्मेदारी

शादी के बाद सुमन बहुत खुश थीं, क्योंकि उनके पास देखरेख के लिए अपनी खुद की चार बकरियों का एक छोटा-सा झुंड था। लेकिन उनके लिए कोई अलग जगह नहीं थी। जंगली जानवरों से बचाने के लिए बकरियों को घर के अंदर ही रखा जाता था, जिससे जल्द ही साफ़-सफ़ाई की गंभीर समस्या पैदा हो गई।

बकरियां अपने ही गंदगी के बीच रहने को मजबूर थीं, जिससे उन्हें बार-बार बीमारियां होने लगीं, जैसे खुरपक्का और मुंहपक्का रोग (Foot and Mouth Disease)। उनका चारा ज़्यादातर सूखी घास, भूसा और मक्का तक सीमित था। जब भी कोई बकरी बीमार पड़ती, तो बिहारपुर से पशु चिकित्सक बुलाना पड़ता, जिसमें अच्छा-खासा खर्च आता था। दवाइयों और इलाज पर घर की मासिक आमदनी का लगभग 20 प्रतिशत तक खर्च हो जाता था।

एक स्वस्थ बकरी बिकने पर लगभग 6,000 रुपये मिल जाते थे और दुग्धावस्था के दौरान दूध से भी कुछ अतिरिक्त आमदनी हो जाती थी। लेकिन बार-बार बीमार पड़ने से उत्पादन घट जाता था और कमाई अनिश्चित बनी रहती थी।



नया बाड़ा और बढ़ती उत्पादकता

जब WOTR ने रामगढ़ में 'Ensuring Farm Livelihood through Assured Irrigation of Tribal Communities in Surajpur district, Chhattisgarh' (आदिवासी समुदायों के लिए सुनिश्चित सिंचाई के माध्यम से कृषि आजीविका सुनिश्चित करना) परियोजना के तहत काम शुरू किया, तब एक एक्सपोज़र विज़िट ने सुमन को बकरी पालन के वैज्ञानिक तरीकों से परिचित कराया। जिसमें सही पोषण, बीमारियों की रोकथाम के साथ ही स्वच्छता और सुरक्षा के लिए ऊँचे बकरीशेड का महत्व शामिल था।

जून 2024 में, WOTR के सहयोग से सुमन ने खंभों पर एक ऊँचा बकरी शेड बनाया। इसमें चार और बकरियों को जोड़ा गया, जिससे उनकी बकरियों की संख्या नौ हो गई। आज उनके पास बारह बकरियां हैं, जिनमें सिरोही नस्ल की बकरियां भी शामिल हैं।

ऊँचा बनाया गया बकरी का बाड़ा साफ़-सफाई सुनिश्चित करता है, जंगली जानवरों से सुरक्षित रखता है और बीमारियों से भी बचाव करता है। अब बकरियों का मल इकट्ठा कर खेतों में खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, जिससे कम लागत वाली एक चक्रीय खेती प्रणाली विकसित हुई है। सुमन जैसी 13 अन्य महिलाओं ने भी अपने-अपने बकरी की बाड़े स्थापित किए हैं और उनसे लाभ उठा रही हैं।



स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च काफी कम हो गया है, उत्पादकता बढ़ी है, और बकरी पालन अब आय का एक भरोसेमंद स्रोत बन गया है।

121 घरों तक पहुंचती एक महिला प्रवर्तक की भूमिका

पशुपालन के साथ-साथ सुमन एक महिला प्रवर्तक के रूप में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। वह गांव के 90 घरों में नियमित रूप से जाती हैं, गर्भवती महिलाओं से मिलती हैं, उनका वजन दर्ज करती हैं, पोषण को लेकर सलाह देती हैं और आयरन की गोलियां तथा समय-समय पर स्वास्थ्य जांच सुनिश्चित करती हैं। गांव की अन्य महिला प्रवर्तकों के साथ मिलकर वह संस्थागत प्रसव को भी प्रोत्साहित करती हैं और परिवारों को ओझर या बिहारपुर से एंबुलेंस सेवा लेने में मदद करती हैं। गांव से महज़ एक किलोमीटर दूर स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तक पहुंच बनाने में भी वह अहम भूमिका निभाती हैं।

वह हर महीने बच्चों के विकास पर नज़र रखने के लिए लंबाई-वजन की जांच करती हैं और माता-पिता को बताती हैं कि उम्र के हिसाब से बच्चों का विकास कैसा होना चाहिए। ये जानकारी पहले बहुत कम लोगों को थी।

सुमन ने किचन गार्डन को बढ़ावा देने में भी अहम भूमिका निभाई है। जहां पहले सब्जियां कभी-कभार उगाई जाती थीं, अब परिवार बेहतर तकनीक अपनाकर पोषण और उत्पादन दोनों बढ़ा रहे हैं। अतिरिक्त उपज को ओझर के साप्ताहिक सोमवार बाज़ार में बेचकर परिवार अपनी आमदनी भी बढ़ा रहे हैं।

सुमन के लिए यह बदलाव बेहद निजी रहा है।

वह कहती हैं, “पहले लोगों के सामने बात करने से डर लगता था।” अन्य महिला प्रवर्तकों के साथ नियमित बैठकों और लगातार प्रशिक्षण ने धीरे-धीरे उनका आत्मविश्वास बढ़ाया।

आज वह बेझिझक घर-घर जाती हैं, स्वास्थ्य, पोषण और आजीविका जैसे मुद्दों पर खुलकर बात करती हैं।



अगर घरवालों का साथ न मिलता, तो यह सब कर पाना मुश्किल था,” सुमन कहती हैं। पति और ससुराल वालों के सहयोग के बिना यह सफ़र संभव नहीं हो पाता।

सुमन ने रामगढ़ में आए बदलाव को अपनी आंखों से देखा है। डीबीआई से उनके क्षेत्र में खेती समृद्ध हुई है, जिससे इलाके में औसत आय बढ़ी है, लोगों को बेहतर पोषण और खाद्य सुरक्षा मिली है, और कोयला खदानों के अलावा भी रोज़गार के नए अवसर बने हैं।

जो महिलाएं पहले घर से बाहर निकलने में हिचकती थीं, वे अब बैठकों में सक्रिय भागीदारी कर रही हैं, सवाल पूछती हैं और आजीविका के नए विकल्प तलाश रही हैं। स्वयं सहायता समूहों (SHG) के सहयोग से कई महिलाओं ने सिलाई इकाइयां, बढ़ई का कार्य और अन्य छोटे आमदनी में इजाफा करने वाले काम शुरू किए हैं।



“मैं अपनी मास्टर डिग्री पूरी करना चाहती हूँ,” सुमन भविष्य के बारे में बात करती हैं। “मैं अपने गांव में ही काम करना चाहती हूँ, ताकि महिलाओं और बच्चों के बेहतर भविष्य में योगदान दे सकूँ।”

“गांव में सिखाऊंगी और खुद भी सीखूंगी,” वह आगे जोड़ती हैं। वह दूसरों को पढ़ाना चाहती है और साथ ही खुद भी सीखती रहना चाहती है।



सशक्त नेतृत्व: रामगढ़ में वीडिीसी अध्यक्ष मनबसिया सिंह की प्रेरक यात्रा



24 वर्षीय मनबसिया सिंह मोटरबाइक से उतरती हैं और तेज़ कदमों से हमारी ओर बढ़ती हैं। अपने नीले स्वेटर पर से धूल झाड़ती हैं। साड़ी की सिलवटें ठीक करती हैं। माथे की बिंदी को सही करती हैं। वह अभी-अभी अपने नए पक्के घर के निर्माण स्थल से लौटी हैं। हाथ में पानी का गिलास लिए, वह मुस्कराते हुए कहती हैं,



आखिरकार हम एक स्थायी घर बना रहे हैं। पहले यह सिर्फ एक कच्चा मकान था।”

मनबसिया के लिए यह घर स्थिरता, आत्मविश्वास और उस भविष्य का प्रतीक है, जिसे उन्होंने अपनी मेहनत से आकार दिया है।

वर्ष 2020 में एक कृषि परिवार में शादी के बाद मनबसिया उम्मीद और अनिश्चितता के साथ रामगढ़ आईं। उन्होंने एक ऐसी जिंदगी में कदम रखा जो पहले की उनकी जिंदगी से पूरी तरह अलग था। आज वह दो छोटे बच्चों की मां हैं, जिनकी उम्र पांच और दो साल है।

शादी से पहले वह अपने माता-पिता के साथ रहती थीं। उन्होंने मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले के माणिकपुर से कंप्यूटर एप्लिकेशन में स्नातक की डिग्री पूरी की। धान, गेहूं, चना, हरा मटर और अरहर की खेती में अपने माता-पिता की मदद करने के साथ ही वह बैढ़न में कम्प्यूटर की कक्षाएं लेकर अपने जीवन के सबसे खुशहाल पल बिता रही थीं।

“पढ़ाई की लाइफ थी, अच्छा लगता था,” वह याद करती हैं। उन्हें पढ़ना बहुत पसंद था।

रामगढ़ आने के बाद कम्प्यूटर पूरी तरह छूट गया, लेकिन सीखने की उनकी इच्छा नहीं। घर की ज़िम्मेदारियां और खेती का काम संभालते हुए, मनबसिया ने कुछ अपना शुरू करने के तरीके खोजने शुरू किए।

सिलाई से कमाई तक

कुछ नया सीखने के उनके ज़ुबे को मार्च 2024 में एक नया मौका मिला। गाँव-स्तर के एक प्रोजेक्ट के तहत उन्हें एक सिलाई मशीन प्राप्त हुई। तकनीक की अपनी जानकारी का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने यूट्यूब ट्यूटोरियल की मदद से सिलाई सीखना शुरू किया।

जो शुरुआत में सिर्फ एक जिज्ञासा के तौर पर शुरू हुआ था, जल्द ही एक छोटे व्यवसाय में बदल गया। आज पास के चार गांवों की महिलाएं ब्लाउज़, बच्चों की फ्रॉक और ड्रेस सिलवाने उनके पास आती हैं।

डिजिटल तकनीक सीखने और मज़बूत इरादे के बूते उनका छोटा व्यवसाय लगातार बढ़ा। इस काम के ज़रिए मनबसिया गांव में, खास तौर पर महिलाओं के बीच मशहूर हो गईं। क्योंकि उन्हें सिलाई के लिए नजदीक के शहर तक जाने की जरूरत नहीं पड़ती और इसके चलते मनबसिया ने समुदाय के भीतर मजबूत और भरोसेमंद रिश्ते बना लिए।

डर से दृढ़ता तक: मनबसिया की नई पहचान

अपनी आजीविका स्थापित करने के बाद, मनबसिया अपने गांव में और योगदान देना चाहती थीं। इसी समय नाबाई के समर्थन से WOTR ने रामगढ़ में 'Ensuring Farm Livelihood through Assured Irrigation of Tribal Communities in Surajpur district, Chhattisgarh' (आदिवासी समुदायों के लिए सुनिश्चित सिंचाई के माध्यम से कृषि आजीविका सुनिश्चित करना) परियोजना के तहत काम करना शुरू किया था। गांववालों को एकजुट करने के लिए शुरुआती बैठकें आयोजित की गईं और ग्राम विकास समिति (VDC) बनाने का प्रस्ताव रखा गया।



गांव के सभी 12 टोलों (इलाकों) के प्रतिनिधि ऑफिस-बेयरर्स चुनने के लिए एक साथ आए। जब मनबसिया को वीडिीसी का चेयरमैन चुना गया तो उन्हें हैरानी और घबराहट भरी खुशी हुई।

“मुझे नहीं पता था कि क्या होगा, कैसे होगा,” वह स्वीकार करती हैं।

दूसरे 9 वीडिीसी सदस्यों के साथ एक एक्सपोज़र विज़िट के दौरान मनबसिया ने WOTR समर्थित गांवों को देखने के लिए बैकुंठपुर का दौरा किया। वहाँ चेक डैम, डायवर्ज़न आधारित सिंचाई (DBI), बकरी पालन, ज़मीन को समतल करने और किचन गार्डन जैसी पहल ने पहले ही लोगों की ज़िंदगी बदल दी थी।

इन पहल को काम करता देख उनका आत्मविश्वास बढ़ा। वीडिीसी जब रामगढ़ लौटी, तो नेतृत्व का भय धीरे-धीरे स्पष्टता और उद्देश्य में तब्दील हो गया।

गांव का काम चरणबद्ध तरीके से शुरू हुआ। मासिक वीडिीसी बैठकों में नई योजनाओं पर चर्चा की गई। लाभार्थियों का चयन सामूहिक रूप से किया गया। इसमें उन ज़रूरतमंद घरों को प्राथमिकता दी गई जो सबसे अधिक लाभान्वित होंगे और लंबे समय तक पहल को बनाए रख सकेंगे।

“पहले लगता था कि कैसे बात करेंगे, कैसे काम होगा,” मनबसिया कहती हैं, “अब सीख ही रहे हैं”।

पोषण और प्रगति की नई लहर

मनबसिया ने कई बदलाव देखे, एक उनके लिए बहुत व्यक्तिगत था। बच्चों की लंबाई-वज़न निगरानी सत्र के दौरान उन्होंने महसूस किया कि उनकी छोटी बेटी कुपोषण के जोखिम में थी। बच्ची नियमित रूप से खाती थी, फिर भी उसकी शारीरिक विकास दर चिंताजनक थी।

“खाती थी, पर कम खाती थी,” वह कहती हैं। मनबसिया तुरंत अपनी बेटी को बिहारपुर स्थित न्यूट्रिशन रिहैबिलिटेशन सेंटर (NRC) ले गईं, जहां उन्होंने 14 दिन रुककर नियमित पौष्टिक भोजन, चिकित्सीय देखभाल और पोषण परामर्श लिया। धीरे-धीरे उनकी बेटी की सेहत में सुधार दिखने लगा।

अब उनकी बेटी का आहार सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है। इसमें पत्तेदार सब्जियाँ, दाल, सब्जी और दूध नियमित तौर पर शामिल रहते हैं। “दूध पीने के लिए मैं उसके पीछे पड़ती हूँ,” मनबसिया हंसते हुए कहती हैं। वह अब भी दुबली-पतली दिखती है”, वह कहती हैं, “लेकिन अब वह सक्रिय और ऊर्जा से भरपूर है।”

सीख से समृद्धि: मनबसिया का संकल्प

गांव के अन्य लोगों के साथ मनबसिया खुद भी किचन गार्डन चलाती हैं। पहले वह पोषण के महत्व पर ध्यान दिये बिना आम सब्जियाँ उगाती थीं। प्रशिक्षण मिलने के बाद अब वह करेले और बीन्स उगाती हैं। उनके पौष्टिक गुणों को समझती हैं।



वह गांव के स्तर पर आए बड़े बदलाव को रेखांकित करती हैं। पहली बार, 40 किसान रबी के मौसम में गेहूं की कटाई कर रहे हैं। यह WOTR द्वारा समर्थित डीबीआई संरचना के माध्यम से पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने से संभव हुआ। इलेक्ट्रिक फेंसिंग (झटका) की मदद से खुले में चरने वाले मवेशियों से फसल सुरक्षित रहती है। पहले रबी की खेती केवल जीविका तक सीमित थी, लेकिन अब इसका विस्तार हुआ है और यह क्षेत्र के किसानों को आर्थिक लाभ भी दिला रही है।



महिलाओं की भागीदारी भी लगातार बढ़ी है। पहले केवल कुछ ही महिलाएं वीडियो बैठकों में आती थीं, लेकिन अब ज्यादा महिलाएं आ रही हैं। बैठक से बचने की जगह वह अपने रोज़मर्रा के काम की योजना बैठक के अनुसार बनाने लगी हैं।

“पहले बुलाते थे तब भी महिलाएं नहीं आती थीं,” वह कहती हैं।
“अब काम देखकर महिलाएं खुद आने लगी हैं।”

भविष्य को लेकर मनबसिया की प्राथमिकता स्पष्ट है, उनकी बेटियों की शिक्षा।



वे आगे क्या बनना चाहेंगी, यह फैसला उन्हीं का होगा”,
वह कहती हैं।

हर महीने करीब 5800 रुपये की नियमित आमदनी के साथ, जब उनका पक्का घर बन जाएगा तो वह अपने सिलाई के व्यापार को बढ़ाएंगी ताकि सिर्फ चार नहीं, बल्कि दस गांवों की महिलाएं उनके पास आएं।



सोलर फेंसिंग के साथ फिर से बोई गई उम्मीद



धूप तेज़ है। खेत से लौटे हरि भगत सिंह के माथे पर पसीने की महीन परत चमक रही है। वह गमछे से चेहरा पोंछते हैं, फिर आँगन में धूप सेंकती जूट की चारपाई पर धीमे से बैठ जाते हैं। पास रखे लोटे से ठंडा पानी गिलास में उड़ेलते हैं और एक ही सांस में पी जाते हैं, जैसे सुबह भर की थकान उसी के साथ उतर गई हो। आँगन के किनारे सूखी घास का ढेर सलीके से जमा है—चार बैलों और तीन बकरियों के लिए।

पशु पास ही बंधे हैं, शांत, मगर चौकन्ने। हरि उनकी ओर देखते हैं, कुछ पल ठहरते हैं, फिर हल्की मुस्कान के साथ कहते हैं, “आज ये हमारे सबसे बड़े सहारे हैं... लेकिन एक समय था जब यही पशु पूरे इलाके की खेती के लिए परेशानी बन गए थे।”

वह बात अधूरी छोड़ देते हैं, जैसे यादों की कोई परत धीरे-धीरे खुल रही हो—और साफ़ हो रहा हो कि उस मुश्किल में असल दोष इन बेजुबान साथियों का नहीं था, बल्कि हालात कुछ और ही थे।

गरीबी, सीमित संसाधन और सिर्फ़ खरीफ तक सिमटी खेती

33 वर्षीय हरि भगत सिंह रामगढ़ में अपनी पत्नी और अपने 12 साल के बेटे के साथ रहते हैं। बचपन से ही खेती उनकी ज़िंदगी का हिस्सा रही है।

“जब से याद है, तब से खेती करते ही थे,” वह कहते हैं। रामगढ़ में जन्मे और यहीं पले-बढ़े हरि भगत सिंह का बचपन बेहद गरीबी में बीता।



पूँजी के अभाव से खुद की ज़मीन पर पहले खेती नहीं कर पाते थे।”

हालाँकि उनके परिवार के पास लगभग 2.5 एकड़ ज़मीन थी, लेकिन उस पर खेती के लिए उनके पास ज़रूरी संसाधन नहीं थे। इसलिए वे दूसरों के खेतों में काम कर गुज़ारा करते थे। पाँच बच्चों—तीन बेटे और दो बेटियाँ—के साथ उनके पिता ने अकेले ही परिवार की ज़िम्मेदारी संभाली। वह दूसरों की ज़मीन जोतकर घर चलाते रहे। जबकि बच्चे बिहारपुर के एक स्कूल में पढ़ाई कर रहे थे।

खेती के साथ-साथ हरि भगत ने बढ़ई का काम भी सीखा। खास तौर पर चारपाई बनाने का काम। स्कूल की छुट्टियों में वह पिता के साथ खेतों में हाथ बंटाते और जूट के धागों से मज़बूत चारपाइयाँ बुनना सीखते थे। तब वह इन्हें 100 से 200 रुपये में बेचते थे। ये कमाई उनकी किताबें खरीदने के लिए पर्याप्त थी। आज यही हुनर उन्हें एक चारपाई के करीब 1,200 रुपये दिला रहा है। जूट की कसावदार बनावट वाली चारपाई पर अपनी उँगलियाँ फेरते हुए वह मुस्कराते हैं और बताते हैं कि यह भी उन्होंने खुद बनाई है। देखने में साधारण लगने वाली इस चारपाई की मजबूती और टिकाऊपन में लगी उनकी मेहनत और लगन साफ़ झलकती है।

अपनी कुछ जमा-पूँजी के सहारे हरि भगत ने अपनी ज़मीन पर खेती शुरू करने का फैसला किया, ताकि पिता की बिगड़ती

सेहत के बीच उनका हाथ बँटा सकें। 12वीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह बिहारपुर से रामगढ़ लौट आए। आगे की पढ़ाई छोड़कर उन्होंने शादी की, और अपनी ही ज़मीन पर खेती शुरू कर दी। पूरी तरह बारिश पर निर्भर खेती के कारण वह खरीफ के मौसम में सिर्फ़ एक धान की फसल ही उगा पाते थे। इससे होने वाली आमदनी परिवार का खर्च चलाने के लिए नाकाफ़ी थी।

शुरुआत में उन्हें उन्नत खेती के तरीकों की जानकारी नहीं थी। बुआई के लिए वह छिड़काव पद्धति अपनाते थे। जिसमें मिट्टी पर बीज यूँ ही बिखेर दिए जाते हैं। इसका असर फसल की गुणवत्ता और पैदावार दोनों पर पड़ता था। धीरे-धीरे आसपास के किसानों को देखकर उन्होंने तय दूरी पर धान की रोपाई करना सीखा और पैदावार में साफ़तौर पर सुधार दिखने लगा।



“एक-दूसरे को देखकर खेती सीखते थे,” वह कहते हैं।

कुछ समय तक हालात ऐसे ही बने रहे और खेती सिर्फ खरीफ के मौसम तक सीमित रही। लेकिन 2025 में ये स्थिति बदली। जब मनरेगा (MGNREGA) योजना के तहत आखिरकार उनके खेत में एक कुआँ बना। इससे पानी की भरोसेमंद उपलब्धता सुनिश्चित हुई और पहली बार रबी की खेती के बारे में सोचना संभव हुआ। यहीं से एक ऐसी चिर-परिचित चुनौती सामने आई, जिसे इलाके के ज्यादातर किसान झेल रहे थे- जानवरों द्वारा फसलों को नुकसान।

खुले मवेशी और जंगली जानवर: रबी की खेती के सामने सबसे बड़ी बाधा

“हम कभी-कभार आलू और टमाटर लगाया करते थे, लेकिन मवेशियों, पालतू पशुओं और जंगली जानवरों के डर के कारण पानी होने के बावजूद रबी के मौसम में पूरी ज़मीन पर खेती नहीं कर पाते थे,” हरि भगत हमसे ये जानकारी साझा करते हैं। जिस थोड़े-से हिस्से को काँटेदार झाड़ियों से घेरकर बचाया जा सका, सिर्फ वहीं खेती की जाती थी और बाकी ज़मीन यूँ ही खाली पड़ी रहती थी।

लेकिन फसलों को नुकसान पहुंचाने के लिए मवेशी खुले छोड़े ही क्यों जाते थे।

खरीफ की फसल के बाद गाँव में मवेशियों को चरने के लिए खुला छोड़ना पारंपरिक प्रथा है। छोटे किसानों के लिए यह सस्ता

और आम तरीका है। सूखे के समय में कटाई के बाद बचे अवशेष और खाली पड़े खेत चारे के रूप में इस्तेमाल होते हैं।

लेकिन रबी की फसलों के लिए ये गंभीर खतरा बन जाता है। गुरु घासीदास राष्ट्रीय उद्यान का रामगढ़ के पास होना इस समस्या को और तीव्र कर देता। क्योंकि यहाँ से जंगली सूअर, भालू और बंदर अक्सर आ जाते हैं और खरीफ के मौसम में भी फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं।

सोलर फेंसिंग, सुनिश्चित सिंचाई और अब पूरे साल उपजती ज़मीन

वर्ष 2024 तक हालात ऐसे ही बने रहे। जिससे हरि भगत सिंह के खेत की पैदावार और आमदनी दोनों प्रभावित हुई। 2024 में, WOTR ने गाँव में ‘Ensuring Farm Livelihood through Assured Irrigation of Tribal Communities in Surajpur district, Chhattisgarh’ (आदिवासी समुदायों के लिए सुनिश्चित सिंचाई के माध्यम से कृषि आजीविका सुनिश्चित करना) परियोजना के तहत काम शुरू किया। ये परियोजना नाबार्ड द्वारा समर्थित थी। इसके लिए नियमित किसान बैठकें आयोजित की जाने लगीं।

ऐसी ही एक बैठक में हरि भगत सिंह ने फसल को जानवरों से होने वाले नुकसान से बचाने के उपाय के तौर पर सोलर फेंसिंग (इलेक्ट्रिक बाड़) के बारे में जाना। यह बाड़ छूते ही एक तेज़, छोटा लेकिन सुरक्षित बिजली का झटका देती है। जिससे जानवरों को कोई नुकसान नहीं होता। जानवर जब एक



बार यह झटका महसूस कर लेते हैं तो वे अपने आप उस जगह से दूर रहते हैं। जिससे यह बाढ़ एक असरदार मनोवैज्ञानिक अवरोध बन जाती है। पालतू या जंगली जानवरों को चोट पहुँचाए बिना फसलों की रक्षा करती है।

“हम डर रहे थे कि इससे जानवरों को गंभीर चोट लग सकती है। लेकिन हमें बताया गया कि अगर कोई जानवर बाढ़ को छूता है तो उसे केवल हल्का झटका लगेगा और वह बिना किसी चोट के दूर चला जाएगा,” वह याद करते हैं। अपनी कुछ बचत और परियोजना से मिली मदद से हरि भगत ने 2024 के खरीफ सीज़न के बाद एक इलेक्ट्रिक बाड़ लगाई। पहली बार उन्होंने रबी के मौसम में अपनी लगभग पूरी ज़मीन पर खेती की। जिसमें उन्होंने मीठा मक्का, हरी मटर और गेहूँ बोया।

“जब मैंने देखा कि गाय और कुत्ता डर कर दूर चले गए लेकिन उन्हें कोई चोट नहीं लगी, तो मेरा सारा डर दूर हो गया,” वह कहते हैं।

बाड़ को पूरे दिन चालू रखने की ज़रूरत नहीं है। इसे तभी चालू किया जाता है जब जानवर आस-पास चर रहे होते हैं और रात में इसे चालू रखा जाता है। बैटरी दिन में चार्ज होती है और पूरी रात तक चलती है। जब बाड़ चालू होती है तो पालतू जानवर बाड़े के अंदर सुरक्षित रहते हैं।

तुरंत मिले नतीजों से उत्साहित होकर, वर्ष 2025 में हरि भगत ने अपनी रबी की खेती को और बढ़ाया। बिना किसी डर के अपनी पूरी ज़मीन पर गेहूँ, हरी मटर, चना, लहसुन, प्याज़ और टमाटर उगाए। वह कहते हैं कि अब किसानों और जानवरों के बीच होने वाला संघर्ष पहले की तुलना में काफी कम हो गया है।

बाड़ लगाने के अलावा वह नियमित किसान बैठकों से भी लाभ उठाते रहते हैं। जिसमें उन्होंने घर की पोषण संबंधी जरूरतों को बेहतर बनाने के लिए चावल की श्री विधि (SRI- System of Rice Intensification) और सब्जियों की खेती जैसी तकनीकें सीखीं। वह एक भी बैठक नहीं छोड़ते।

भविष्य की बात करते हुए हरि भगत एक जंगल की ओर इशारा करते हैं और हमें उसके पास अपनी एक छोटी ज़मीन के बारे में बताते हैं। जिस पर वह पानी की कमी और जानवरों के हमलों के डर से अब तक खेती नहीं कर पाए हैं। “एक दिन मैं उस ज़मीन पर भी खेती करना चाहता हूँ,” वह कहते हैं।

रबी की फसल ने उनकी आमदनी बढ़ाई और उन्हें आजीविका के विकल्प बढ़ाने की आर्थिक ताकत भी दी है। अब खेती के साथ-साथ वह अपनी पत्नी के संग किराने की एक छोटी दुकान भी चलाते हैं और समय मिलने पर चारपाइयाँ बनाकर बेचते रहते हैं।

“हाँ, मैं अब केवल मेहनत करने, आगे बढ़ने और थोड़ी और कमाई बढ़ाने के बारे में सोचता हूँ,” वह कहते हैं। “अगर हम अच्छा कमाएंगे तो अपने बच्चों को पढ़ा पाएंगे ताकि उन्हें अच्छी नौकरी मिले।”

परिवार का सहारा बनने और खेती संभालने के लिए एक समय हरि भगत सिंह को पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। लेकिन अब उन्हें भरोसा है कि बढ़ी हुई आमदनी से वह अपने परिवार और अपने बेटे की इच्छाओं को पूरा कर पाएंगे। उसे वही रास्ता नहीं अपनाना पड़ेगा। जब उनसे बेटे को लेकर उनके सपने के बारे में पूछा गया, तो वह मुस्कुराते हुए कहते हैं,

“मैं चाहता हूँ बच्चा आगे खेती भी करे और पढ़ाई भी करे।

”

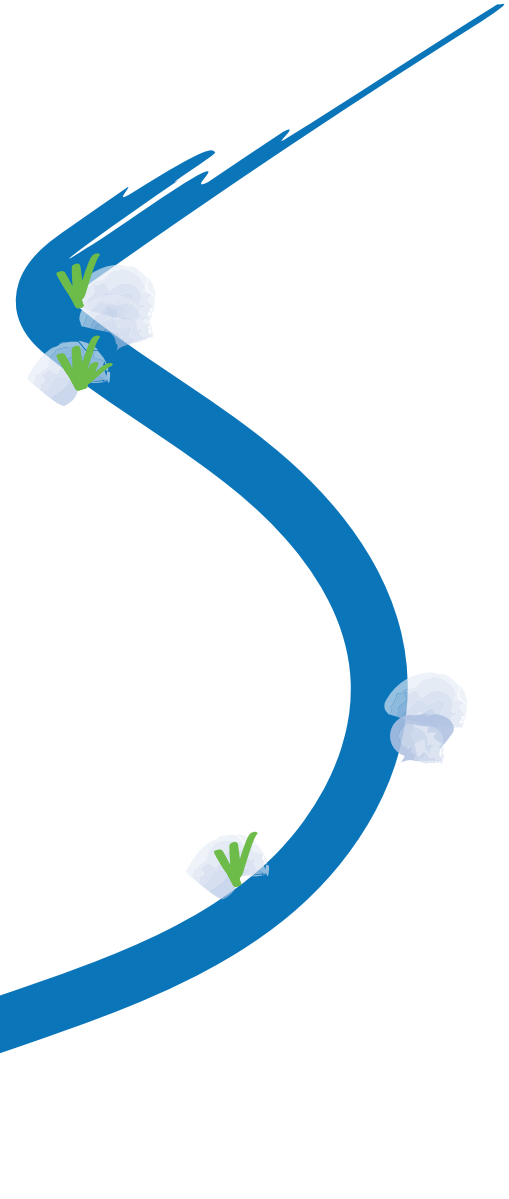
83 किसान डीबीआई से लाभान्वित

1 लाख लीटर जल भंडारण क्षमता सृजित

81.2 एकड़ भूमि नियमित रूप से रबी फसल के अंतर्गत

13 बकरी शेड स्थापित

₹45,160 औसत वार्षिक आय में वृद्धि





www.wotr.org